॥ दोहा॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज ननज मनुमुकुरु सुधारर
। बरनउँरघुबर बबमल जसुजो दायकुफल चारर
॥ बुद्धधहीन तनुजाननके सुममरौं पवन-कुमार
। बल बुधध बबद्या देह मोहहिंहरह कलेस
बबकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस नतह लोक उजागर ॥

राम दतू अतुमलत बल धामा ।
अिंजनन पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बबक्रम बजरिंगी ।
कुमनत ननवार सुमनत के सिंगी ॥

किं चन बरन बबराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कँुधचत के सा ॥४॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बबराजै।
काँधेमूँज जनेउ साजै॥

शिंकर सुवन के सरी निंदन ।
तेज प्रताप महा जगविंदन ॥

बबद्यावान गुनी अनत चातुर ।

राम काज कररबेको आतुर ॥
प्रभुचररत्र सुननबेको रमसया ।

राम लखन सीता मन बमसया

॥८॥

सूक्ष्म रूप धरर

मसयहहिंहदखावा । बबकट रूप

धरर लिंक जरावा ॥

भीम रूप धरर असुर सँहारे।

रामचन्द्र के काज सँवारे॥

लाय सजीवन लखन जजयाए

। श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥

रघुपनत कीन्द्ही बहुत बडाई ।

तुम मम षप्रय भरतहह सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

अस कहह श्रीपनत कण्ठ

लगावैं॥

सनकाहदक ब्रह्माहद मुनीसा

। नारद सारद सहहत अहीसा

॥

जम कुबेर हदगपाल जहाँते।

कबब कोबबद कहह सके

कहाँते॥

तुम उपकार सुग्रीवहहिंकीह्ना ।
राम ममलाय राज पद दीह्ना
॥१६॥

तुम्हरो मिंत्र बबभीिण माना ।
लिंके श्वर भए सब जग जाना
॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु।
लील्यो ताहह मधुर फल जानू॥

प्रभुमुहरका मेमल मुख माहीिं ।
जलधध लाँनघ गयेअचरज
नाहीिं॥

दग
ुमग काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरेतेते॥२०॥

राम दआ
ु रेतुम रखवारे।
होत न आज्ञा बबनुपैसारे॥

सब सुख लहैतुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काह ूको डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तैकाँपै॥

भूत षपशाच ननकट
नहहिंआवै। महावीर जब नाम
सुनावै॥२४॥

नासैरोग हरैसब पीरा ।
जपत ननरिंतर हनुमत बीरा ॥

सिंकट तैहनुमान छुडावै। मन
क्रम बचन ध्यान जो लावै॥

सब पर राम तपस्त्वी राजा ।
नतनके काज सकल तुम साजा
॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई
अममत जीवन फल पावै॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
हैपरमसद्ध जगत उजजयारा
॥

साधुसन्द्त के तुम रखवारे।
असुर ननकिं दन राम दल
ुारे॥

अष्ट मसद्धध नौ ननधध के
दाता । अस बर दीन जानकी
माता ॥

राम रसायन तुम्हरेपासा । सदा

रहो रघुपनत के दासा ॥३२॥

तुम्हरेभजन राम को पावै।
जनम जनम के दख
ु बबसरावै॥

अिंतकाल रघुवरपुर जाई ।
जहाँजन्द्म हररभक्त कहाई ॥

और देवता धचत्त ना धरई ।
हनुमत सेइ सबगसुख करई ॥

सिंकट कटैममटैसब पीरा ।
जो सुममरैहनुमत बलबीरा ॥३६॥

जैजैजैहनुमान गोसाईं ।
क ृपा करह ु गुरुदेव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहह बिंहद महा सुख होई ॥

जो यह पढैहनुमान चालीसा ।
होय मसद्धध साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरर चेरा ।
कीजैनाथ ह्रदय मह डेरा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पवन तनय सिंकट हरन,
मिंगल मूरनत रूप ।

राम लखन सीता सहहत,

हृदय बसह सुर भूप ॥

Published By: https://shobdochari.com/